ट्रम्पकी बड़ी हार

अमेरिकाके मध्यावधि चुनावमें राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्पकी रिपब्लिकन पार्टीको हार मिली है। विपक्षी दल डेमोक्रेट पार्टीने सीनेटमें ५१ सीटें और हाउस आफ रिप्रेजेंटेटिव्समें २१८ सीटें जीतकर बहुमत हासिल कर लिया है। पिछले २१ मध्यावधि चुनावोंमें १९ बार राष्ट्रपतिकी पार्टीको पराजयका सामना करना पड़ा है। इसलिए इस बारकी हार ट्रम्पके लिए कोई नयी बात नहीं है लेकिन इससे ट्रम्पकी लोकप्रियतामें अवश्य बड़ी गिरावट आयी है। अपवादके तौरपर १९९८ में बिल क्लिण्टन और २००२ में जार्ज बुशकी पार्टियोंने जीत दर्ज की थी। मध्यावधि चुनावमें इस बार भारतीय मूलके प्रत्याशियोंका जलवा विशेष रूपसे उल्लेखनीय रहा। सीनेटमें बहुमत खोनेके बाद ट्रम्पकी मुश्किलें अवश्य बढ़ेगी। विशेष बात यह भी है कि डेमोक्रेट पार्टीको युवाओंने ज्यादा मतदान किया है। साथ ही महिला मतदाताओंकी पसन्द भी डेमोक्रेट रहे। ट्रम्पने सार्वजनिक रूपसे अपनी हार स्वीकार कर ली है और यह भी कहा है कि हम डेमोक्रेट्सिके साथ मिलकर काम करेंगे। उनके साथ काम करनेके लिए हम उत्साहित हैं। हम कोई रास्ता निकाल लेंगे। तीन नवम्बरको हुए मध्यावधि चुनावोंका विशेष महत्व इसलिए है कि इनके परिणाम राष्ट्रपति ट्रम्पके शेष कार्यकाल, उनकी नीतियों और रिपब्लिकन पार्टीकी विधायी क्षमताको प्रभावित करेंगे। चुनाव परिणामोंसे ट्रम्प प्रशासनके प्रति जनताकी नाराजगी स्पष्ट रूपसे दिखती है। अमेरिकी मतदाताओंके एक बड़े वर्गने सरकारकी आर्थिक और विदेश नीतिसे जुड़े मुद्दोंपर गहरा असन्तोष व्यक्त किया है। इसके कई बड़े कारण हैं। इनमें महंगी और जीवनयापनकी बढ़ती लागत, ईरान युद्धका दुष्प्रभाव, भ्रष्टाचार और प्रशासनिक पारदर्शिता प्रमुख है। चुनाव परिणामोंका सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक पक्ष है। डेमोक्रेट पार्टीके सीनेटपर नियंत्रणसे ट्रम्पके लिए मुश्किलें बढ़ सकती हैं। हालांकि ट्रम्पके पास वीटोकी शक्ति बनी रहेगी। ऐसी भी आशंका है कि ट्रम्पके खिलाफ महाभियोग आ सकता है। अमेरिकाकी विदेश नीतिमें भी बदलाव किये जा सकते हैं। साथ ही भारत और अमेरिकाके सम्बन्धोंपर भी प्रभाव सम्भावित है। भारतके लिए इन चुनावोंका विशेष महत्व है। दोनों देशोंके सम्बन्ध व्यापार, रक्षा, तकनीक, ऊर्जा, अन्तरिक्ष और हिन्द-प्रशान्त क्षेत्रकी सुरक्षा जैसे अनेक क्षेत्रोंसे जुड़े हैं। इसलिए भारतको अब बदली हुई स्थितियोंको ध्यानमें रखते हुए अपनी रणनीति बनानी होगी। इसके लिए भारतको सोच-समझकर कदम बढ़ाना होगा।

धरनेपर सुप्रीम सुझाव

दिल्लीमें प्रदर्शनके दौरान अराजकतापर नाराजगी व्यक्त करते हुए सर्वोच्च न्यायालयने मंगलवारको जो सख्त टिप्पणी की है वह न केवल महत्वपूर्ण और न्यायसंगत है, बल्कि प्रदर्शनकारियोंको भी इसके निहितार्थको समझनेकी जरूरत है। मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) सूर्यकान्त, न्यायमूर्ति जायमाल्या बागची और न्यायमूर्ति वी. मोहनाकी पीठने कहा कि विरोध प्रदर्शन करनेका संवैधानिक अधिकार सभीको है, लेकिन अनिश्चित कालतक किसी स्थानपर लम्बे समयतक कब्जा बनाये रखनेकी अनुमति नहीं, क्योंकि इससे दूसरे समूहके लोगोंको विरोध करनेके इसी अधिकारसे वंचित होना पड़ेगा। यदि एक ही समूह लम्बे समयतक कब्जा बनाये रखेगा तो और लोग कहां जायंगे। विरोध प्रदर्शनके लिए निश्चित समय और निर्धारित अवधि होनी चाहिए। अनुमति आदेशमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि अनुमति क्यों दी जा रही है, कितने अवधिके लिए दी जा रही है या नहीं दी जा रही है। पीठने यह टिप्पणी निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमारके खिलाफ हालमें ही हुए प्रदर्शनसे जुड़ी याचिकाओंपर सुनवाईके दौरान की। कारोबारियोंने त्योहारी सीजनमें दो माहके लिए प्रदर्शनोंपर रोक लगानेकी मांग की थी। इस सम्बन्धमें पीठका यह कहना महत्वपूर्ण है कि विरोध करनेका अधिकार और व्यापार करने एवं आजीविका कमानेके अधिकारके बीच सन्तुलन होना चाहिए। इस तरहके लम्बी अवधितक चलने वाले प्रदर्शनोंसे सर्वाधिक प्रभावित दिहाड़ी मजदूर होते हैं। प्रदर्शनकारियोंको प्रदर्शन स्थगित कर देना चाहिए, क्योंकि यह मामला शीर्ष न्यायालयके विचाराधीन है, इसलिए आन्दोलनकारियोंको कोर्टका निर्णय आनेतक शान्ति और सौहार्द बनाये रखनेकी जरूरत है। त्योहारी सीजनमें हजारों करोड़ प्रतिदिन नुकसान गम्भीर चिन्ताकी बात है। राजनीति दलोंको सिर्फ अपनी पड़ी है, उन्हें कारोबारियों और इससे जुड़े श्रमिकोंके हितोंसे कुछ मतलब नहीं है जिनका काम पूरी तरह चौपट हो गया है। शीर्ष न्यायालयको कोई खास समाधान निकालनेकी जरूरत है। अभी त्योहारी सीजन चल रहा है, इसलिए किसी भी तरहके विरोध प्रदर्शन या धरनेकी अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

लोक संवाद

मासूमोंमें बढ़ती हिंसक प्रवृत्ति

महोदय,-बचपनका नाम आते ही मनमें मासूमियत, निश्छल मुस्कान और बेफिक्र शरारतोंकी तस्वीरें उभरती हैं। लेकिन हालके दिनोंमें बच्चोंके व्यवहारसे आ रही ख़बरें दिल दहला देने वाली हैं। हरियाणाके पंचकूलाके एक स्कूलमें तीसरी कक्षाके महज आठ सालके छात्र द्वारा केजी क्लासकी छह सालकी मासूम बच्चीपर जिस तरह ईंटों और गमलेसे जानलेवा हमला किया गया, उसने पूरे देशको झकझोर कर रख दिया है। क्लासरूमके भीतर हुई यह ख़ौफनाक वारदात सिर्फ एक प्रशासनिक लापरवाही नहीं है, बल्कि यह हमारे समाजके सामने एक बेहद डरावना सवाल खड़ा करती है कि आखिर हमारे मासूम बच्चे इतने हिंसक क्यों हो रहे हैं। बाल मनोवैज्ञानिकोंका मानना है कि इतनी छोटी उम्रमें बच्चोंके भीतर इस कदर क्रूरता और संवेदनशीलताकी कमी अचानक पैदा नहीं होती। यह एक गहरी मानसिक और सामाजिक विकृतिका संकेत है, जिसकी जड़ें हमारे बदलते परिवेशमें छिपी हैं। आजकलके बच्चोंका एक बड़ा हिस्सा स्मार्टफोन, इंटरनेट और गेमिंगकी आभासी दुनियामें कैद हो चुका है। वे घंटों ऐसे वीडियो गेम्स खेलते हैं या वेब सीरीज देखते हैं जहां मार-काट, खून-खराबा और हिंसाको सामान्य बात बनाकर परोसा जाता है। जब एक कच्चा और कोमल दिमाग लगातार स्क्रीनपर इस तरहकी हिंसा देखता है तो उसकी वास्तविक संवेदनाएं कुण्ठित होने लगती हैं। उनके लिए किसीको शारीरिक नुकसान पहुंचाना महज एक खेलका हिस्सा लगने लगता है। वे वास्तविक जीवनके दर्द और डिजिटल स्क्रीनके रोमांचमें फर्क नहीं कर पाते। इसके साथ ही बदलते आधुनिक दौरमें एकल परिवारोंका चलन बढ़ा है, जहां माता-पिता दोनों काममें व्यस्त हैं। बच्चोंको बड़ोंका वह नैतिक मार्गदर्शन नहीं मिल पा रहा है जो कभी संयुक्त परिवारोंमें दादा-दादी या नाना-नानीसे मिलता था। घरका अशांत वातावरण, माता-पिताके आपसी झगड़े उनके भीतर एक अनजाना अकेलापन और चिड़चिड़ापन भर देता है। यही दबा हुआ गुस्सा धीरे-धीरे हिंसक आक्रामकताका रूप ले लेता है। पंचकूलाकी इस घटनाने स्कूलोंके भीतर बच्चोंकी सुरक्षा और निगरानी व्यवस्थापर भी बड़े सवाल उठाये हैं। कक्षामें शिक्षकोंकी अनुपस्थिति और सीसीटीवी मॉनिटरिंगकी कमी इस तरहके हादसोंको बढ़ावा देती है। हालांकि घटनाके बाद शिक्षकोंको निलंबित करना या कमेटियां गठित करना एक तात्कालिक प्रशासनिक प्रक्रिया है, लेकिन यह इस मानसिक बीमारीका स्थायी इलाज नहीं है। अब समय आ गया है कि इस खतरेकी घंटीको गम्भीरतासे सुना जाय। केवल बच्चोंको कोसने या स्कूलोंपर ठीकरा फोड़नेसे बात नहीं बनेगी। माता-पिताको अपने बच्चोंके स्क्रीन टाइमको नियंत्रित करना होगा और वे इंटरनेटपर क्या देख रहे हैं, इसपर पैनी नजर रखनी होगी। उनके व्यवहारमें आने वाले चिड़चिड़ेपन या आक्रामकताको बचपनकी जिद समझकर नजरअंदाज करनेके बजाय उनसे प्यारसे संवाद करना होगा। साथ ही स्कूलोंमें केवल किताबी ज्ञान और ग्रेड्सकी होड़के बजाय नैतिक शिक्षा और व्यावहारिक मूल्योंपर जोर दिया जाना चाहिए। बच्चोंको यह सिखाना बेहद जरूरी है कि गुस्सा आनेपर खुदको कैसे संभालें और दूसरोंके प्रति दया भाव कैसे रखें। बचपनको संस्कार, सुरक्षा और स्नेहकी जरूरत होती है, नफरत या हिंसाकी नहीं। यदि आज हमने मिलकर अपने मासूमोंके मनमें पनप रहे इस गुस्सेको शांत नहीं किया तो हम एक ऐसे भविष्यका निर्माण कर रहे होंगे जो बेहद असुरक्षित, असंवेदनशील और हिंसक होगा। बच्चोंकी मासूमियत बचाना पूरे समाजका सामूहिक दायित्व है। **-सूर्यदीप कुशवाहा, वाराणसी।**

पर्यावरणीय चुनौती है प्रदूषण

दिल्लीमें दिवालीकी आहटके साथ ही एक बार फिर प्रदूषणका संकट गहराने लगा है। त्योहारकी तैयारियोंके बीच राजधानीकी हवा इतनी जहरीली होती जा रही है कि लोगोंके लिए खुलेमें सांस लेना भी कठिन हो गया है। सुबहकी सैर करने वाले लोग घरोंमें रहनेको मजबूर हैं। यह स्वास्थ्य और जीवनकी सुरक्षासे जुड़ा गम्भीर प्रश्न है।

❐ महेन्द्र तिवारी

भारतीय मौसम विज्ञान संस्थानकी वायु गुणवत्ता संबंधी निगरानीके अनुसार दिल्लीके कई इलाकोंमें वायु गुणवत्ता सूचकांक ४०० के पार पहुंच गया। जहांगीरपुरीमें यह ४४०, पंजाबी बागमें ४३६ और रोहिणीमें ४२५ दर्ज किया गया। कुछ अन्य क्षेत्रोंमें भी स्थिति बेहद चिन्ताजनक रही। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्डके अनुसार ३ नवम्बरको दिल्लीका औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक ३५० तक पहुंच गया था। यह इस वर्ष फरवरीके बाद सबसे खराब स्थिति बतायी गयी। इन आंकड़ोंसे स्पष्ट है कि राजधानीकी हवा अब सामान्य जन-जीवनके लिए गम्भीर चुनौती बन चुकी है। प्रदूषणकी गम्भीरताको देखते हुए वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोगने २ नवम्बरको दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्रमें क्रमिक प्रतिक्रिया कार्ययोजनाके दूसरे चरणको लागू कर दिया। इसके अंतर्गत सड़कोंकी नियमित यांत्रिक सफाई, धूल दबानेके लिए पानीका छिड़काव, निर्माण स्थलोंपर कड़ी निगरानी और प्रदूषण फैलाने वाले वाहनोंपर नियंत्रण जैसे उपाय किये जा रहे हैं। सार्वजनिक परिवहनको बढ़ावा देनेके लिए अतिरिक्त रेलगाड़ियां चलाने और यातायातके दबाव वाले स्थानोंपर निगरानी बढ़ाने जैसे कदम भी उठाये गये हैं। हालांकि सवाल यह है कि क्या ये उपाय राजधानीको प्रदूषणसे वास्तविक राहत दिला पायंगे या फिर हर वर्षकी तरह कुछ दिनोंकी सख्तीके बाद स्थिति पहले जैसी हो जायगी।



दिवाली प्रकाश, उल्लास और नयी आशाओंका त्योहार है। इसकी चमक धुएं और धुंधमें खोनी नहीं चाहिए। सरकार, उद्योग, किसान और आम नागरिक, सभीको अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। अदालतके आदेशोंका पालन और प्रदूषण नियंत्रणके उपाय तभी सफल होंगे, जब उनके साथ जन-भागीदारी भी जुड़ी होगी। हमें ऐसी दिवाली मनानेका संकल्प लेना चाहिए, जिसमें घरोंमें दीप जलें, चेहरोंपर मुस्कान हो और हवामें सांस लेनेका भरोसा बना रहे। आखिर स्वच्छ हवा किसी एक मौसम या त्योहारकी जरूरत नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिकका बुनियादी अधिकार है।

दिल्लीके प्रदूषणका सबसे बड़ा कारण किसी एक गतिविधिको नहीं माना जा सकता। इसके पीछे कई कारक एक साथ काम करते हैं। वाहनोंसे निकलने वाला धुआं, औद्योगिक इकाइयोंका उत्सर्जन, निर्माण कार्योंसे उड़ने वाली धूल, सड़कोंपर जमा मिट्टी, कूड़ा जलाना और आसपासके राज्योंमें पराली जलानेकी घटनाएं वायुको प्रदूषित करती हैं। इसके अतिरिक्त मौसममें बदलाव भी इस समस्याको गम्भीर बना देता है। तापमानमें गिरावट, हवाकी कम गति और वातावरणमें नमीके कारण प्रदूषक कण ऊपर नहीं उठ पाते। वे धरतीके निकट ही जमा होते रहते हैं। परिणामस्वरूप धुंधकी मोटी परत बन जाती है और सांसके साथ सूक्ष्म प्रदूषक कण शरीरके भीतर पहुंचने लगते हैं। हर वर्ष धानकी कटाईके बाद पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेशके कुछ क्षेत्रोंमें फसल अवशेष जलानेकी घटनाएं सामने आती हैं। इस वर्ष भी इन घटनाओंमें वृद्धिकी खबरें हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषदके उपग्रह आंकड़ोंके अनुसार, ३ नवंबरको छह राज्योंमें फसल अवशेष जलानेकी ७९८ घटनाएं दर्ज की गयीं। हालांकि दिल्लीके प्रदूषणके लिए केवल परालीको जिम्मेदार ठहराना उचित नहीं होगा। राजधानीके भीतर मौजूद प्रदूषणके स्रोत भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। जब स्थानीय प्रदूषण और प्रतिकूल मौसमी परिस्थितियां एक साथ मिलती हैं, तब समस्या और विकराल हो जाती है। इसलिए राज्योंके बीच आरोप-प्रत्यारोपके बजाय साझा समाधानकी आवश्यकता है।

दिवालीके अवसरपर पटाखोंका उपयोग इस समस्याको और बढ़ा सकता है। आतिशबाजीसे निकलने वाला धुआं और सूक्ष्म कण पहलेसे प्रदूषित वातावरणमें अतिरिक्त विषाक्तता पैदा करते हैं। इसीको ध्यानमें रखते हुए सर्वोच्च न्यायालयने इस वर्ष दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्रमें प्रमाणित हरित पटाखोंके सीमित उपयोगकी अनुमति दी है। न्यायालयके निर्देशके अनुसार ७ और ८ नवंबरको सुबह छहसे सात बजे तथा रात आठसे दस बजेतक ही इन्हें जलाया जा सकेगा। इनकी बिक्री ४ से ६ नवम्बरतक निर्धारित अधिकृत स्थानोंपर होगी। अस्पतालों, स्वास्थ्य केन्द्रों, वृद्धाश्रमों, शिक्षण संस्थानों और घोषित शांत क्षेत्रोंके ३०० मीटरके दायरेमें पटाखे जलानेपर रोक रहेगी। ९ नवम्बरसे पटाखोंपर पूर्ण प्रतिबंध फिर लागू हो जायगा। हरित पटाखोंको पारम्परिक पटाखोंकी तुलनामें कम प्रदूषण फैलाने वाला विकल्प माना जाता है। इनका निर्माण वैज्ञानिक मानकों और निर्धारित प्रमाणनके अनुसार किया जाता है। इनके पैकेटपर पहचानके लिए विशेष संकेत और क्यूआर कोड होना आवश्यक है। लेकिन यह समझना जरूरी है कि हरित पटाखे प्रदूषण रहित नहीं होते। उनसे भी धुआं, ध्वनि और हानिकारक कण निकलते हैं। इसलिए न्यायालयके निर्देशोंका पालन केवल प्रशासनकी जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिकका कर्तव्य भी है। प्रदूषणका सबसे अधिक प्रभाव बच्चों, बुजुर्गों गर्भवती महिलाओं और पहलेसे सांस तथा हृदय संबंधी समस्याओंसे जूझ रहे लोगोंपर पड़ता है। छोटे बच्चोंके फेफड़े विकासकी अवस्थामें होते हैं। ऐसेमें जहरीली हवा उनके स्वास्थ्यपर दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकती है। बुजुर्गोंके लिए भी प्रदूषित वातावरण गम्भीर खतरा पैदा करता है। स्वस्थ व्यक्ति भी लम्बे समयतक प्रदूषित हवामें रहनेसे सांस संबंधी परेशानियोंका शिकार हो सकता है। इस स्थितिमें विद्यालयों, अस्पतालों और सार्वजनिक संस्थानोंको विशेष सतर्कता बरतनी चाहिए।

प्रदूषणसे निबटनेके लिए सरकारको तात्कालिक कदमोंके साथ दीर्घकालिक योजना भी बनानी होगी। सार्वजनिक परिवहनको अधिक सुविधाजनक और सुलभ बनाना इसका महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि बसों और रेलगाड़ियोंकी संख्या बढ़ेगी तथा उनकी सेवाएं नियमित होंगी तो निजी वाहनोंपर निर्भरता कम हो सकती है। निर्माण स्थलोंपर धूल रोकनेके नियमोंका उल्लंघन करने वालोंके विरुद्ध कठोर कारवाई होनी चाहिए। किसानोंके सामने फसल अवशेषोंके निबटारेकी समस्याको समझे बिना पराली जलानेपर रोक लगाना पर्याप्त नहीं होगा। उन्हें ऐसी मशीनों, तकनीकों और आर्थिक सहायताकी जरूरत है, जिनसे खेतोंमें बचे अवशेषोंका उपयोग किया जा सके। इसके लिए केन्द्र और राज्य सरकारोंको मिलकर काम करना चाहिए। किसानोंको दोषी ठहरानेके बजाय उन्हें व्यवहारिक विकल्प उपलब्ध कराने होंगे। फसल अवशेषोंसे जैविक खाद, ऊर्जा और अन्य उपयोगी उत्पाद तैयार करनेकी व्यवस्था विकसित की जा सकती है। इससे पर्यावरणकी रक्षाके साथ किसानोंकी आय बढ़ानेके अवसर भी पैदा होंगे। नागरिकोंकी भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। छोटी-छोटी सावधानियां सामूहिक रूपसे बड़ा बदलाव ला सकती हैं। त्योहार मनानेके लिए पटाखोंको अनिवार्य माननेकी सोच भी बदलनी होगी। दीपक, रंगोली, सामूहिक सांस्कृतिक आयोजन और परिवारके साथ उत्सव मनानेके अनेक विकल्प मौजूद हैं। त्योहारका वास्तविक आनन्द तभी है, जब उसकी खुशियां किसी दूसरेके लिए बीमारी और परेशानीका कारण न बनें।

दिल्लीकी प्रदूषित हवा हमें विकासकी दिशा और जीवनकी गुणवत्तापर पुनर्विचार करनेके लिए मजबूर करती है। ऊंची इमारतें, चौड़ी सड़कें और चमकते बाजार किसी शहरकी सफलताके पर्याप्त प्रमाण नहीं हो सकते। किसी राजधानीकी वास्तविक समृद्धि इस बातसे भी तय होती है कि वहां रहने वाले नागरिक कितनी स्वच्छ हवामें सांस लेते हैं। हर वर्ष सर्दियोंके आरम्भमें प्रदूषणका बढ़ना और फिर अस्थायी उपायोंसे उसे नियंत्रित करनेका प्रयास हमारी नीतियोंकी कमजोरियोंको उजागर करता है। अब समय आ गया है कि प्रदूषणको मौसमी संकट माननेके बजाय स्थायी सार्वजनिक स्वास्थ्य और पर्यावरणीय चुनौतीके रूपमें देखा जाय। दिवाली प्रकाश, उल्लास और नयी आशाओंका त्योहार है। इसकी चमक धुएं और धुंधमें खोनी नहीं चाहिए। सरकार, प्रशासन, उद्योग, किसान और आम नागरिक, सभीको अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। अदालतके आदेशोंका पालन और प्रदूषण नियंत्रणके उपाय तभी सफल होंगे, जब उनके साथ जन-भागीदारी भी जुड़ी होगी। हमें ऐसी दिवाली मनानेका संकल्प लेना चाहिए, जिसमें घरों और गलियोंमें दीप जलें, चेहरोंपर मुस्कान हो और हवामें सांस लेनेका भरोसा बना रहे। आखिर स्वच्छ हवा किसी एक मौसम या त्योहारकी जरूरत नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिकका बुनियादी अधिकार है।

क्रिप्टोकी चोरीसे उपजे सुरक्षाके सवाल

दुनियाके सबसे बड़े क्रिप्टो एक्सचेंज बाइनेंससे लगभग ६.३ अरब डालरकी डिजिटल संपत्ति कुछ ही मिनटोंमें उड़ा ली गयी। यह क्रिप्टो इतिहासकी सबसे बड़ी चोरी है। यह घटना भारतके लिए कई सवाल छोड़ जाती है।

❐ डा. संजय वर्मा

डिजिटल इंडिया और यूपीआई जैसे अभियानोंकी बदौलत भारत डिजिटल लेन-देनमें दुनियाके अग्रणी देशोंमें है। यहां लाखों लोग क्रिप्टोमें पैसा लगाते हैं। इसलिए क्रिप्टो एक्सचेंजमें हुई सेंधमारी एक अनिश्चित भविष्यके मद्देनजर हमारे लिए भी कई सवाल पैदा कर रही है। अबतक जो जांच-पड़ताल हुई है, उसमें सेंधमारोंके बारेमें कुछ अंदाजे लगाये गये हैं। जैसे कि ब्लॉकचेन विश्लेषक कम्पनियों- टीआरएम लैब्स और चेनालिसिसके मुताबिक इस सेंधमारीके पीछे उत्तर कोरियाकी हैकर इकाई 'ट्रेडरट्रेटर' का हाथ है। हैकरोंका यह समूह हैकिंगके मामलेमें पहलेसे कुख्यात लाजरस समूहसे जुड़ा बताया गया है। शुरुआती जानकारीके अनुसार सेंध बाइनेंसके ही एक इंजीनियरके हैक हुए लैपटॉपसे लगी और फिर महज २० मिनटमें अरबों डालरकी क्रिप्टो सफाईसे निकाल ली गयी। यह साबित करता है कि लेन-देन और निवेश जितना डिजिटल होगा, कमजोर कड़ियां उतनी ही महंगी पड़ेंगी। दिलचस्प यह है कि चुराई गयी क्रिप्टोको बाजारमें खपाना नकदी लूटको खपाने जितना आसान नहीं। ब्लॉकचेन (क्रिप्टो निर्माण और संचालनमें काम आने वाली तकनीक) में हर लेन-देन सार्वजनिक बहीखातेमें दर्ज होता है। इसलिए चोरको माल तुरन्त छोटे टुकड़ोंमें बांटना, दूसरी क्रिप्टो करेंसीमें बदलना और वैध धनमें मिलाना पड़ता है। इसके लिए फर्जी पहचानसे कई एक्सचेंजोंपर खाते, छोटी-छोटी जमाएं और एक ब्लॉकचेनसे दूसरीपर छलांगका सहारा लिया जाता है। यह हथेलीपर दहकता अंगारा लेकर, खुद जले बिना, उसे ठिकानेतक पहुंचाने जैसा है। बाइनेंस मामलेमें भी चुराये गये बिटकॉइन हजार-हजार और सौ-सौके टुकड़ोंमें बांटे गये और डालर-आधारित स्टेबलकॉइन विकेन्द्रीकृत एक्सचेंजोंपर बाजार भावसे दस फीसदी सस्ते बेचे गये। लेकिन इस बीच कई लेन-देन नियंत्रण करने वाली उन कम्पनियोंके जरिये गुजरे, जो ऐसी हरकतोंपर कड़ी नजर रखती हैं। जैसे कि स्टेबलकॉइन जारी करने वाली टेथर, सर्कल और रिपल जैसी कम्पनियां। इन कम्पनियोंने हैकिंग होनेके घंटेभरके भीतर करीब २.७ अरब डालर फ्रीज कर दिये। यानी जहां लेन-देनके बीच कोई जवाबदेह संस्था थी, वहां चोरी रोकी जा सकी। इसके बावजूद हमलावरके पास करीब २.४ अरब डालरके ईथर और बिटकॉइन बचे हैं, जिन्हें कोई वैध या सरकारी एजेंसी नहीं रोक पायी। इसलिए सवाल है कि आखिर क्रिप्टो करेंसीके सारे लेन-देन जवाबदेह संस्थाओं और कम्पनियोंके जरिये संपन्न क्यों नहीं कराये जा रहे हैं।

हालांकि चिन्ता इससे भी बड़ी है। संयुक्त राष्ट्रके विशेषज्ञ वर्षोंसे कहते रहे हैं कि क्रिप्टो चोरी उत्तर कोरियाके प्रतिबंधित हथियार कार्यक्रमोंकी कमाईका बड़ा जरिया है। यानी किसी एक्सचेंजकी सुरक्षामें चूक अंततः किसी मिसाइल कार्यक्रमका ईंधन बन सकती है। पाकिस्तान जैसे अस्थिर पड़ोसीके रहते भारतके लिए यह सुरक्षाका सवाल भी है। यूं हमारे लिए यह संकट एकदम अनजाना भी नहीं। जुलाई २०२४ में घरेलू एक्सचेंज वजीरएक्ससे करीब २३ करोड़ डालर चुराये गये और उसके तार भी लाजरस समूहसे जोड़े गये। लाखों उपयोगकर्ताओंके खाते महीनों फ्रीज रहे। साथ ही नुकसान सभी ग्राहकोंमें बांटनेका प्रस्ताव आया और पुनर्गठनकी प्रक्रिया भारतके बजाय सिंगापुरकी अदालतमें चली। भारतीय एक्सचेंज, भारतीय ग्राहक, भारतीय पैसा, परन्तु इंसाफके लिए विदेशी कानूनका सहारा! जुलाई २०२५ में देशके सबसे बड़े एक्सचेंज कॉइनडीसीएक्ससे करीब ४.४ करोड़ डालर उड़ाये गये कम्पनीने नुकसान अपने खजानेसे उठाया और सरकारी एजेंसी सर्ट-इनके साथ जांच की। परन्तु यह कम्पनीकी सदिच्छा थी, कोई कानूनी बाध्यता नहीं। सबक यह कि भारतमें हैकिंगके बाद निवेशकका पैसा लौटना इसपर निर्भर है कि उसका एक्सचेंज कितना अमीर और नेक है। बाइनेंस छह अरब डालरका घाव सह सकता है, कोई छोटा भारतीय स्टार्टअप नहीं।

बाइनेंस जैसे विदेशी मंचोंपर सक्रिय भारतीय निवेशकोंका पैसा भी इस हादसेमें अटका और बिटकॉइन छह हफ्तेके निचले स्तरपर आ गया। वैश्विक झटकेकी कीमत दलाल स्ट्रीटसे लेकर छोटे शहरोंके जेन-जी निवेशकोंको चुकानी पड़ सकती है। यही वह जगह है जहां भारतकी क्रिप्टो नीतिके आकलनकी जरूरत पड़ती है। मौजूदा स्थितियोंमें क्रिप्टो करेंसीके निवेशकोंको प्रत्येक निवेशपर ३० प्रतिशतकी दरसे कर चुकाना पड़ता है। इसके अलावा हरेक लेन-देनपर एक प्रतिशतके टीडीएस यानी स्रोतपर ही टैक्स लगानेका प्रावधान है। एक अन्य कानूनी प्रावधान यह है कि क्रिप्टो एक्सचेंजको अपना पंजीकरण सरकारकी वित्तीय खुफिया इकाई (एफआईयू) में कराना होता है। इसका उद्देश्य हवाला कारोबार रोकना है। किन्तु यहां सवाल यह है कि क्या ये प्रावधान निवेशकोंके पैसेकी सुरक्षामें मददगार होते हैं। सचाई यह है कि इन तीनों उपायोंके बावजूद क्रिप्टोमें पैसा लगाने वाले भारतीय निवेशकोंको कोई सुरक्षा हासिल नहीं होती है। इसका कारण यह है कि देशमें ऐसी नियामक संस्थाका अभाव है, जो क्रिप्टो एक्सचेंजसे ग्राहकोंको किसी आर्थिक नुकसानसे बचानेके लिए आपात भंडारमें पर्याप्त पूंजी रखनेको बाध्य करे। साथ ही एक्सचेंजको भी नुकसानकी पहली जिम्मेदारी लेनेकी व्यवस्था बनवाये। शेयर बाजारकी नियामक संस्था-सेबी ऐसा करती है। वह शेयर ब्रोकरोंसे ग्राहकोंको होने वाले संभावित नुकसानसे बचानेके लिए प्रतिभूतियां अलग रखवाती है और रिजर्व बैंकसे संबंधित बैंकोंका सुरक्षा ऑडिट करवाती है। जबकि क्रिप्टो एक्सचेंजोंके लिए ऐसी कोई बाध्यता नहीं है। इसपर क्रिप्टोमें निवेशपर अत्यधिक कराधानकी वजहसे भारतीय निवेशक विदेशी अथवा कम प्रचलित, लेकिन असुरक्षित क्रिप्टो एक्सचेंजोंकी शरणमें चले जाते हैं, जिससे उनका जोखिम और बढ़ जाता है।



प्रदक्षिणाका अर्थ

❐ श्रीश्री रविशंकर

प्रदक्षिणाका अर्थ है इर्द-गिर्द जाना। दक्षिणाका अर्थ है कुशलतासे कुछ पूरा करना। अंग्रेजीका शब्द डेक्सटरोस संस्कृतके दक्षिणा शब्दसे आया है, जिसका मतलब है निपुणता। प्रदक्षिणाका अर्थ है एक बहुत ही विशेष रूपसे निपुण होना, एक बहुत ही निपुण तरीका जो कि कौशल और योग्यतासे बहुत निपुणतासे प्राप्त किया जाता है। प्रदक्षिणाका अर्थ है इर्द-गिर्द जाना। प्रदक्षिणाका अर्थ है निपुणतासे इर्द-गिर्द जानेकी योग्यता प्राप्त करना। जब आप किसी मंदिरके अंदर जाते हो तो मंदिरके निर्माणकी व्यवस्थाके अनुसार इसके तीन घेरे होते हैं। पहला घेरा हर्बल बागीचा होता है, जिसमें खूब सारे पेड़-पौधे होते हैं। यह पेड़ किस दिशामें लगाये जायं, यह मंदिरके निर्माणकी व्यवस्थाके अधीन आता है। सभी पेड़-पौधे दिशाओं और हवाके बहावके अनुसार लगाये जाते हैं। कुछ औषधिवाले पौधे, फूल और पेड़ बाहरी घेरेमें लगाये जाते हैं और जब आप इस हर्बल खुशबूसे निकलते हो तो इससे भावनात्मक और शारीरिक समस्यायोंका इलाज होता है और शरीरके असंतुलन ठीक हो जाते हैं। यह प्राय: एक किलोमीटर लंबा रहता है और इसमेंसे गुजरते समय सारे शरीरमें संचार बेहतर हो जाता है। शरीरके लिए जरूरी तेल और सुगंध खास कर पीपलके पेड़की, शरीरके द्वारा सोख ली जाती है। यही अकेला पेड़ है जो चौबीसों घंटे आक्सीजन छोड़ता है। बाकीके पेड़ आधा समय आक्सीजन छोड़ते हैं। पेड़ एक व्यक्तिकी बहुत सारी समस्याएं दूर करते हैं। सामाजिक रूपसे बहुत ज्यादा परिचर्चामें नहीं होनेकी वजहसे एक बड़ा तबका इससे अनभिज्ञ रह जाता है, खासकार पेड़-पौधोंके वैज्ञानिक पक्षको लेकर। खास कर इंफट्रिलिटी की। प्रदक्षिणा ईश्वरके लिए या अन्य किसी और कारणसे नहीं, बल्कि स्वास्थ्यके लाभके लिए की जाती है। तब दूसरा घेरा आता है जिसमें बहुतसे स्त्री-पुरुषोंकी मूर्तियां रखी रहती हैं। पुराने समयमें वहांपर बैठ कर कुछ देरके लिए ध्यान करनेको कहा जाता था। इस तरहसे पहला घेरा आपको शारीरिक रूपसे बेहतर बनाता है। वहांकी हवामें सांस लेनेसे वात, पित्त और कफका संतुलन ठीक होता है। दूसरे घेरेमें मनकी सारी कल्पनाएं खत्म होती हैं। तब अंतमें आप मुख्य भागमें आते पवित्र मुख्य स्थान, जहां आप आंखें बंद करके बैठते हो और शून्यताका अनुभव करते हो। हिंदू धर्ममें प्रदक्षिणाका बहुत बड़ा महत्व है।

प्रकृति संरक्षण संचारमें सहायक पर्व

❐ आनन्द उपाध्याय

भारतवर्ष पर्वोंका देश है। सनातन संस्कृतिके गौरवपूर्ण त्योहारोंमें दीपावली पर्वकी विशिष्ट महत्ता है। भारतीय सनातन संस्कृतिमें त्योहार सिर्फ धार्मिक अनुष्ठानभर न होकर प्रत्यक्ष तौरपर प्रकृति संरक्षण एवं पर्यावरण संतुलनसे सम्बद्ध परिलक्षित होते हैं। दीपावली पर्वका शुभारम्भ धनतेरसके शुभ पर्वसे होता है। पांच दिवसीय इस पर्वमें कार्तिक माहकी त्रयोदशी तिथिको धनतेरस मनाया जाता है। विभिन्न धातुओंके बर्तन एवं आभूषण विशेष रूपसे क्रय किये जाते हैं अगले दिवसको नरक चर्तुदशी या छोटी दीपावली मनायी जाती है। तीसरे दिन दीपावलीका मुख्य पर्व एवं लक्ष्मी गणेशके पूजनका आयोजन होता है। यह दिन कार्तिक माहकी अमावस्या तिथिको होता है। अगले दिन गोवर्धन पूजनका होता है जिसे अन्नकूटके नामसे भी संबोधित किया जाता है। इस पूज्य तिथिको गोवर्धन पर्वतकी पूजाका